फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 166 अप्रैल 2002

कहत कबीर

राजधर्म है : कत्ल करना और रक्षक के चोगे के लिये चौथ वसूलना।

आतंकवाद - आतंकवाद

✶ लोग युद्ध के लिये तैयार ही नहीं हो रहे थे। लोगों को युद्ध के लिये प्रेरित करने की अमरीका सरकार की कोशिशें लगातार पिटती जा रही थी। बात 1941 की है। लूट-खसूट में हिस्से-बाँट के लिये मची महा मार-काट को चलते दो वर्ष हो गये थे। ऐसे में अमरीका के राष्ट्रपति को सरकार के खुफिया संगठनों ने सूचना दी कि जापान सरकार की फौजें घात लगा कर पर्ल हार्बर स्थित अमरीका सरकार के फौजी अड्डे पर भारी हमला करने की तैयारी कर रही हैं। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने इन गुप्त सूचनाओं को पर्ल हार्बर सैनिक अड्डे के कमान्डर तक से छिपाया ताकि जापान सरकार की फौजों का आक्रमण अकस्मात ही लगे और अमरीका सरकार की फौजों को भारी नुकसान हो। ऐसा ही हुआ। पर्ल हार्बर पर "अचानक" हुये हमले में अमरीका सरकार की सेनाओं के हजारों सैनिक-अफसर मारे गये। दुख, क्षोभ, क्रोध की भावनाओं को बदला लेने, "दुष्ट और धोखेबाज को सजा देने" की भावनाओं में बदलने में अग्रणी भूमिका अदा कर राष्ट्रपति रूजवेल्ट महानायक बने। लोगों को युद्ध में कुदा दिया गया। उस मार-काट में संसार-भर में पाँच करोड़ लोगों की जानें गई, दुख-दर्द की तो थाह ही नहीं।

✶ महानायकों की कतार में एक और महानायक हिटलर है। लोगों के सरकार व व्यवस्था विरोधी रुख के बढते जाने से सिर-माथों पर बैठे बेहद चिन्तित थे। जर्मनी स्थित ही नहीं बल्कि अमरीका तक स्थित फोर्ड, जनरल मोटर्स, आई बी एम कम्पनियों के चेयरमैनों-मैनेजिंग डायरेक्टरों-जनरलों ने लोगों को नाथने, लोगों की नकेलें कसने के लिये जर्मनी में महानायक के वास्ते जमीन तैयार की। तब "मुसलमानों" को नहीं बल्कि "यहूदियों" को मार-भगाओ को समस्याओं के सरल समाधान के तौर पर पेश किया गया था। सिर-माथों पर बैठों की सच और झूठ में कोई फर्क नहीं होता, दोनों एक ही हैं की हकीकत को हिटलर के नेतृत्व में नई बुलन्दियों पर पहुँचाया गया। जर्मनी सरकार के संसद भवन को सरकार के मुखिया हिटलर की पार्टी ने आग लगाई और विरोधियों को उस अग्निकाण्ड के लिये जिम्मेदार ठहरा कर हिटलर महानायक बना। "संसद पर हमला" आज से 70 वर्ष पहले जर्मनी में लोगों को नाथने में काम आया। "शुद्ध जर्मन", "शुद्ध आर्य" और राष्ट्रहित व देशभक्ति के हिटलरवादियों के बवंडर ने 1939-45 के कत्लेआम में चर्चिलवादियों, स्तालिनवादियों और रूजवेल्टवादियों के संग अग्रणी भूमिका अदा की। लेकिन अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जर्मनी सरकार की फौजें मोर्चों पर लड़ रही थी तब जर्मनी स्थित कारखानों में मजदूरों ने सरकार के प्रोपेगण्डा और अति सख्ती को अँगूठा दिखा कर उत्पादन 35 प्रतिशत कम कर दिया, और ... और युद्धरत हर देश की फौज में ऐसे सैनिकों की सँख्या लाखों में रही जिन्होंने मार-काट से परहेज किया — गोलियाँ चलाई ही नहीं, हवा में चलाई, बम निर्जन स्थानों पर फेंके अन्यथा ... अन्यथा 5 करोड़ की बजाय 50 करोड़ कत्ल हुये होते।

✶ एक बात माई-बाप की। विष्णु अवतार, प्रभु-पुत्र, पैगम्बर-वारिस वाली श्रृंखला में रूस सरकार का कर्ता-धर्ता ज़ार हुआ करता था। सिर-माथों पर बैठे अपने मुखिया को जनता का पिता प्रचारित करते थे लेकिन रूस में लोग थे कि ज़ार के खिलाफ होते जा रहे थे। ऐसी समस्या का समाधान सिर-माथों पर बैठे अक्सर डण्डा उठाने में देखते हैं। और, डण्डा उठाने से अधिक महत्वपूर्ण होता है डण्डा उठाने को जायज ठहराना — ठीक उसी प्रकार जैसे कि युद्ध से अधिक महत्वपूर्ण होता है लोगों को युद्ध के लिये प्रेरित करना, काम के लिये प्रेरित करना। इसलिये डण्डे की आवश्यकता के लिये सहमति के वास्ते माई-बाप ज़ार ने अपने चाचा, जो कि रूस सरकार का गृहमन्त्री भी था, की खुफिया पुलिस से हत्या करवाई और "जघन्य हत्या" को देश के दुश्मनों का कृत्य प्रचारित किया। इस घटना को अभी सौ साल ही हुये हैं।

कुटिलता ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के चरित्र में है। सिर-माथों पर बैठने के लिये साम-दाम-दण्ड-भेद एक अनिवार्यता है। चाणक्य-कौटिल्य ने ढाई-क हजार वर्ष पूर्व इसे सूत्रबद्ध किया। लेकिन ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थायें मानव समाज के एक लाख वर्ष से अधिक के जीवन में मात्र पाँच-सात हजार वर्ष के दौर में हैं। और इतने अल्प-काल में ही इन्होंने क्या-क्या नासूर दिये हैं! पर हाँ, आज भी सर्वोपरि महत्व की बात है दबे-कुचलों, शोषितों-पीड़ितों द्वारा अपनाया जाने वाला रुख। इस सिलसिले में "ज्यादा बातें... लेकिन कौनसी बातें" में एक ब्रेक ले कर एक बार फिर आतंकवाद पर यह बातचीत है।

चर्चा का आरम्भ 11 सितम्बर को अमरीका सरकार के सेना मुख्यालय पेन्टागन और विश्व व्यापार केन्द्र की टावरों से यात्री विमानों के टकराने से कर सकते हैं पर हमें लगता है कि यह लक्षणों पर ही केन्द्रित रहना होगा। उक्त घटना का कुछ जिक्र अन्त में करेंगे। आरम्भ के लिये तेरी-मेरी बातें लेते हैं ताकि मर्ज पर, बीमारी पर ध्यान केन्द्रित हो और समाधान के लिये मन्थन में सहायता मिले।

— ऐसा लगता है कि हम में प्रत्येक हर वक्त फट पड़ने को तैयार बैठी-बैठा रहता है। माँ-बेटे, पिता-पुत्री, पति-पत्नि, भाई-बहन, बहन-बहन, भाई-भाई और मित्रों के बीच बातचीतों में भी कटुता-कड़वाहट बहुत व्यापक हो गई है। कोई कहती है कि सहनशक्ति नहीं रही, कोई कहता है कि लिहाज नहीं रहा।

— कुनबे वालों, पड़ोसियों, सहकर्मियों तथा सम्पर्क में आने वाले अन्य जनों के संग अत्यधिक सावधानी बरतना बढता जा रहा है। दिखावटी मेल-मिलाप, बहुत कम सम्बन्ध अथवा मुँहफट बदतमीजी के दायरे बढते जा रहे हैं। कहते हैं कि जमाना ही ऐसा आ गया है।

— मैं सही, तू गलत। मैं इक्कीस, तू उन्नीस। जीवन में बची-खुची खुशबू को बदबू में बदलते इस हाव-भाव के सम्मुख हम सब नतमस्तक लगते हैं।

जाहिर है कि हम में प्रत्येक सिकुड़ गई है, सिमट गया है। यह सिकुड़ना "मैं" तक सिमटने पर नहीं थमा है। बल्कि, प्रत्येक

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

असुरक्षा-डर

ए बी बी मोटर मजदूर : " फैक्ट्री में दस साल नौकरी करते हो गये पर लगता है कि अब आगे नौकरी नहीं कर पायेंगे। पहले 8 घण्टे ड्युटी और 4 घण्टे ओवर टाइम में 20 हजार एच.पी. का उत्पादन देना पड़ता था जिसे 25 हजार कर दिया। अब कम्पनी कहती है कि 8 घण्टे की ड्युटी में ही 50 हजार एच.पी. का उत्पादन दो। नौकरी कैसे रहेगी ? कहाँ जायें ? ज्यादा चिन्ता से हर समय माथा खराब रहता है।"

फौजी आटो वरकर : " दिसम्बर में श्रम विभाग में समझौता हुआ और हम 45 मजदूरों को ड्युटी पर लिया गया। हम में से 10 को कम्पनी ने 5 फरवरी को नौकरी से निकाल दिया। फिर 7 मार्च को 11 और मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने निकाल दिया। छुट्टी के दिन, 17 मार्च को फैक्ट्री से कई मशीनें निकाल कर मैनेजमेन्ट दिल्ली ले गई। सोमवार, 18 मार्च को हम फैक्ट्री पहुँचे तो वहाँ ताला लगा था। गेट पर कम्पनी बन्द का नोटिस लगा था जिसमें हम से हिसाब लेने को कहा था। हम 4-5 दिन से रोज फैक्ट्री जाते हैं पर वहाँ कोई आता ही नहीं, हिसाब देना तो दूर की बात। क्या करें ?"

हैदराबाद इन्डस्ट्रीज मजदूर : " सीमेन्ट को जोड़ने का काम करता एस्बेस्टोस फाइबर पूरी फैक्ट्री में उड़ता है, केबिनों में भी घुस जाता है। यह फाइबर पानी छिड़कने से ही बैठता है लेकिन एस्बेस्टोस तो साँस के जरिये ही नहीं बल्कि छूने से भी मार करता है। कोई लाख चाहे तो भी हैदराबाद इन्डस्ट्रीज में एस्बेस्टोस से बच नहीं सकता। साँस की तकलीफों से तो फैक्ट्री का हर मजदूर ग्रस्त है। अन्दर से हमारे शरीर खोखले हो गये हैं। हर मजदूर का बुरा हाल है। पिछले साल ऑन ड्युटी 6 नहीं बल्कि 9 मजदूर मरे थे। पहले किसी मजदूर की मृत्यु पर एक दिन फैक्ट्री बन्द रहती थी लेकिन अब मैनेजमेन्ट उत्पादन जारी रखवाती है और मजदूर की मौत के बदले में हमें एक दिन की दिहाड़ी देती है ! कोई हद नहीं है ! ! शक्तिशाली कम्पनी है इसलिये खुलेआम खतरनाक एस्बेस्टोस का इस्तेमाल कर रही है। एस्बेस्टोस से हम मजदूर तो काफी कुछ जानते हुये भी मर ही रहे हैं, एस्बेस्टोस की चद्दरें करोड़ों अनजान-अनभिज्ञ लोगों पर भी घातक वार कर रही हैं।"

और बातें यह भी

बाटा मजदूर : " 10-12 साल से फैक्ट्री में नई भर्ती नहीं कर रही कम्पनी। फैक्ट्री में बुजुर्ग मजदूरों की बड़ी सँख्या है और हर महीने 4-5 रिटायर हो जाते हैं। ऐसे में उत्पादन के लिये आवश्यक सँख्या से मजदूर अधिकाधिक कम पड़ते जा रहे हैं। कभी कोई लाइन बन्द कर, कभी ट्रान्सफर कर और कभी डबल जॉब करवा कर सँख्याबल की इस कमी पर बाटा मैनेजमेन्ट पर्दे डालती रही है। इधर मार्च माह में कम मजदूरों के कारण 332 डिपार्टमेन्ट का उत्पादन सुबह साढे सात बजे की बजाय कभी 9 बजे शुरू हुआ तो कभी एक बजे। यह कम्पनी की कमी की वजह से हुआ पर सजा मजदूरों को दी गई है। मार्च के 15 दिन का वेतन पहली अप्रेल को बाटा मैनेजमेन्ट ने दिया तब उत्पादन कम हुआ कह कर 332 डिपार्टमेन्ट के हर वरकर के वेतन में से 240 रुपये काट लिये।"

एजिको वरकर : "पैसे नहीं हैं का रोना कम्पनी रोती रहती है। हमें वेतन देरी से देती है और वह भी दो-दो, चार-चार को दे कर कई दिन में जा कर देती है।"

गुजरात

सपने
खील-बताशों के
खील खील हो कर
बिखर गये
अबीर, गुलाल
गर्द बन कर
उड़ गये
टेसू, नागफनी में
ढल गये
होली गीत
मातम में बदल गये
. . . ऐसी आई होली !
ऐसी गुजरी होली ! !

— आनन्द, बालाघाट

कास्टमास्टर मजदूर : " मैं 6 साल से लगातार काम कर रहा था पर कम्पनी ने मुझे ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिया। दो महीने पहले फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट में मेरी तीन उँगलियाँ कट गई। कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी और मुझे ई.एस.आई. अस्पताल नहीं भेजा। मैनेजमेन्ट मुझे सैक्टर-7 में वधवा नर्सिंग होम ले गई और वहाँ इलाज करवाया। उँगलियाँ 15 दिन बाद थोड़ी ठीक हुई तो मुझे फैक्ट्री में ड्युटी पर रख लिया। बीस दिन मुझे ड्युटी करते हो गये और घाव भर-से गये तो मैनेजमेन्ट ने अचानक मुझे नौकरी से निकाल दिया। मैंने श्रम विभाग में शिकायत की। चार मार्च को पहली तारीख पर कास्टमास्टर मैनेजमेन्ट ने श्रम अधिकारी के सम्मुख एक्सीडेन्ट रिपोर्ट भरने से साफ मना कर दिया। दूसरी तारीख कल 22 मार्च को है।"

बीको इंजिनियरिंग वरकर : " 1970 से चल रही सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री को बन्द करने की चर्चा मैनेजमेन्ट ने दिसम्बर 2000 में चलवाई। बहका-फुसला कर नौकरियों से इस्तीफे लेने के संग-संग कम्पनी मशीनें भी निकालने लगी। इस प्रकार 125 मजदूरों और 125 स्टाफ वालों में से 247 के इस्तीफे लिखवा लिये गये पर हम तीन मजदूरों ने नौकरी छोड़ने से साफ इनकार कर

(बाकी पेज तीन पर)

कानून-कानून....

एटप मजदूर : " प्लॉट 27 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हम 200 मजदूरों में किसी को भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं। चोट लगने पर एक दिन दवा करवा देते हैं और फिर कहते हैं कि अपने पैसों से इलाज करवाओ। ड्युटी रोज 12 घण्टे। महीने की तनखा 1200-1400-1800 रुपये।"

ओमेगा ब्राइट स्टील वरकर : " हम 100 मजदूरों को कम्पनी ने ठेकेदार के जरिये रखा है। हमें 1500-1600 रुपये महीना तनखा दी जाती है और इन 1500-1600 में से 300 रुपये पी.एफ. व ई.एस.आई. के काट कर हमारे हाथ में हर महीने 1200-1300 रुपये ही देते हैं।"

आटोपिन मजदूर : " जनवरी और फरवरी की तनखायें हमें आज 31 मार्च तक नहीं दी हैं।"

इन्जेक्टो लिमिटेड वरकर : " कम्पनी ने जनवरी और फरवरी की तनखायें आज 22 मार्च तक नहीं दी हैं।"

हाई पोलिमर लैब्स मजदूर : " कैजुअल वरकरों को मैनेजमेन्ट बोनस नहीं देती।"

इण्डिया फोर्ज वरकर : " बरसों से काम कर रहे मजदूरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. नहीं। ज्यादातर मजदूरों को दो ठेकेदारों के जरिये रखा है। हैल्परों को 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं। रोज जबरन 4 घण्टे ओवर टाइम करवाते हैं, पैसे सिंगल रेट से। गुण्डे बुला कर मजदूरों को डराते-धमकाते हैं।"

क्लच आटो मजदूर : " फरवरी की तनखा आज 16 मार्च तक नहीं दी है। जनवरी का वेतन 25 फरवरी तक जा कर दिया था।"

नेपको बेवल गियर वरकर : " फरवरी का वेतन आज 19 मार्च तक हमें नहीं दिया है।"

भोगल्स शूज मजदूर : " 26 डी एल एफ स्थित फैक्ट्री में कई वरकरों को तो जनवरी की तनखा भी आज 12 मार्च तक नहीं दी है। फरवरी के पैसे हम में किसी को नहीं दिये हैं। हम ने श्रम विभाग में शिकायत की है। फैक्ट्री में तनखा माँगने पर गोली मारने की धमकी देते हैं।"

सिकन्द्स लिमिटेड वरकर : " जनवरी की तनखा हमें 28 फरवरी को जा कर दी। फरवरी का वेतन आज 12 मार्च तक नहीं दिया है। ओवर टाइम काम के लिये जबरन रोकते हैं जबकि ... जबकि ओवर टाइम के पैसे 1998 से नहीं दिये हैं।"

सुपर आटो इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "कम्पनी ने हमें ठेकेदारों के जरिये भर्ती किया है। बिना तनखा के हमें दो-दो महीने हो जाते हैं।"

**डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद**—121001

आतंकवाद-आतंकवाद... (पेज एक का शेष)

" मैं" कई-कई टुकड़ों में विभाजित हो हर समय परस्पर विरोधी इच्छाओं-भावनाओं की उठा-पटक का अखाड़ा बना है। हर एक विस्फोटकों से लबालब भरी है। प्रत्येक व्यक्ति बम बना है। और, प्रत्येक के सम्मुख विनाश अथवा नव-निर्माण में चुनने का विकल्प है।

ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं का विकास हमें इस मोड़ पर ले आया है। सिर-माथों पर बैठों में अधिकतर हमें विनाश की राहों पर ले जाने के लिये प्रयासरत हैं। इसी का अंग रही हैं उनकी जाति, धर्म, रंग, लिंग, क्षेत्र, देश के आधार पर हमें भिड़ाने की कोशिशें। इसी सिलसिले में पहचान की राजनीति के नये सूत्र, "आतंकवाद का विरोध" और "आतंकवाद का समर्थन" एक-दूसरे के विपरीत लगते हैं पर वास्तव में यह हमें विनाश की राह पर धकेलने वाली दुलत्ती है।

पहचान की राजनीति

सगी बहनों, सगे बहन-भाई, सगे भाइयों तक के बीच इस कदर दूरियाँ जगजाहिर हैं कि कुनबे-खानदान की समरसता तक की बात करना अटपटा लगता है, गोत्र तो बहुत बड़ी इकाई हो जाती है। ऐसे में जाति, धर्म, रंग, लिंग, क्षेत्र और देश, जो कि करोड़ों लोगों को अपने दायरों में समेटते हैं, उनके आधार पर लोगों के बीच समरसता के दावों को क्या कहेंगे? किसी को चिन्हित करने के लिये उसकी जाति, उसके धर्म, उसके रंग, उसके लिंग, उसके क्षेत्र अथवा उसके देश के लेबल का प्रयोग करना क्या बताता है? कैसे सम्बन्धों के लिये यह लेबल आधार प्रदान करते हैं? व्यक्ति को इस प्रकार जानना-पहचानना किसके हित में है?

यह सही है कि इन्सान के सिमटने-सिकुड़ने ने इस कदर अकेलेपन को जन्म दिया है कि कई बार किसी भी प्रकार की समुदाय-भावना सुखकर लगती है। लेकिन इन्सानियत के बढते अभाव को नजरअन्दाज कर जाति-धर्म-देश के आधार पर सम्बन्ध बनाने के प्रयास कोढ में खुजली से सुख प्राप्त करने के समान हैं।

दरअसल, व्यक्ति के हजारों पहलुओं में से दो-चार को छाँट कर तथा उनके आधार पर दुभान्त, भेदभाव करना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के माफिक है। गैर-बराबरी और भेदभाव एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। लिंग, आयु, रंग, कद-काठी, गोत्र-जाति, पन्थ-धर्म, क्षेत्र-भाषा, नागरिकता आदि के आधार पर भेदभाव करना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं की सामान्य क्रिया में है। और, रोजमर्रा के जीवन की बजाय घटनाओं की चर्चा इन व्यवस्थाओं की भाषा है। ऐसे में घटनारूपी भेदभावों का अच्छा-खासा प्रचार-प्रसार रहता है।

यह समुदायहीनता की बढती प्रवृत्ति, बढता अकेलापन और भेदभावों के तथ्य, प्रचारित-प्रसारित भेदभाव हैं जो कि पहचान की राजनीति, आइडेन्टिटी पॉलिटिक्स के आधार बनते हैं। इस राजनीति में पुनः व्यक्ति के हजारों पहलुओं में से दो-चार को उभार कर ऊँच-नीच वाली सीढी में फेर-बदल के लिये कसरतें की जाती हैं। काला राष्ट्रपति बन जाता है, महिला लड़ाकू जहाज की पायलेट, चमार सुपरिंटेन्डेन्ट पुलिस .....और पहचान की राजनीति का जगन्नाथी रथ नये सिरे से कुचलता आगे बढने लगता है।

इसलिये "सिर-माथों पर कौन बैठे?" की बजाय प्रश्न यह होना चाहिये कि "सिर-माथों पर कोई भी क्यों बैठे?" लेकिन ऐसे सवालों को व्यापक स्तर पर उठने देने से रोकने के लिये धमाकों की श्रृंखला है और है नित नये रंग-रोगन के संग पहचान की राजनीति।

करना-करवाना-होने देना

लौटते हैं 11 सितम्बर की घटना पर। कुछ तथ्य :

— जर्मनी सरकार के खुफिया संगठन बी एन डी ने जून 01 में अमरीका सरकार के खुफिया संगठन सी आई ए को बता दिया था कि यात्री विमानों का अपहरण कर उन्हें अमरीका में महत्वपूर्ण ठिकानों से टकराने की योजना बन रही है।

— 4 से 14 जुलाई 01 ओसामा बिन लादेन ने दुबई के अमरीकन अस्पताल में अपना इलाज करवाया और वहाँ 12 जुलाई को सी आई ए अधिकारी उससे मिले। कहने को 1998 से लादेन अमरीका सरकार की सूची में "मोस्ट वान्टेड" अपराधी था।

— अगस्त 01 में रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने अमरीका सरकार को बिना लागलपेट के, दो टूक शब्दों में होने वाले हमलों की सूचना भिजवाई।

— राष्ट्रपति बुश का पिता और पूर्व राष्ट्रपति बुश सीनियर कार्लाइल ग्रुप का वरिष्ठ सलाहकार है और इस कम्पनी को अमरीका सरकार के पूर्व मन्त्री संचालित करते हैं। अक्टूबर 01 तक कार्लाइल ग्रुप में सउदी अरब के शाही परिवार तथा लादेन परिवार का पैसा लगा था। फौजी साजोसामान की ठेकेदार कार्लाइल ग्रुप की युद्ध में चाँदी ही चाँदी होती है।

— जुलाई 01 में ही अमरीका सरकार ने फैसला ले लिया था कि मध्य-अक्टूबर में अफगानिस्तान सरकार पर सैनिक आक्रमण करना है। इस सिलसिले में अमरीका सरकार ने ओमान में 10 सितम्बर से पहले 23 हजार सैनिक उतार दिये थे।

इस प्रकार के कई अन्य तथ्य अमरीका में बोस्टन नगर से प्रकाशित "न्यू डेमोक्रेसी" पत्रिका देती है। कहते हैं कि अपराध की जाँच में पहला प्रश्न होता है : अपराध से फायदा किसे हुआ? "न्यू डेमोक्रेसी" के अनुसार 11 सितम्बर की घटना से अधिकतम लाभ अमरीका सरकार, सेना, हथियार निर्माता उद्योग और तेल उद्योग को हुआ है।

सोवियत यूनियन के बिखरने के बाद "शत्रुहीन" अमरीका सरकार द्वारा "आतंकवाद", "इस्लामी आतंकवाद" को पाल-पोस कर "बेहद खतरनाक शत्रु" की रचना करना जगजाहिर है। दरअसल, लोगों के बढते विरोध से निपटने के लिये हर देश की सरकार ने "आतंकवाद" के रूप में अपने लिये एक "शत्रु" की रचना की है।

सिर-माथों पर बैठों की कुटिलता की कोई सीमा नहीं है। इसलिये साजिशों का भण्डाफोड़ करने तक स्वयं को सीमित रखना कोई समाधान नहीं है। ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में नित नई साजिशें, अनगिनत साजिशें की जाती हैं।

हाँ, व्यक्ति के दो-चार पहलुओं तक स्वयं को सीमित रखने की बजाय प्रत्येक व्यक्ति के हजारों पहलुओं की हकीकत को स्वीकारना पहचान की राजनीति पर लगाम लगायेगा। यह जाति, धर्म, देश के नाम पर भड़का कर कत्ल करवाने पर रोक लिये है।

आतंकवाद की डुगडुगी हो चाहे धर्म की पिपही, अपनी सहमति देने से हमारे द्वारा इनकार करना ऊँच-नीच वाली वर्तमान समाज व्यवस्था के अन्त का आरम्भ है।

व्यक्ति के लिये आदर व्यक्ति के सिकुड़ने को रोकता है। सम्मान-आधारित तालमेल समुदाय-रूप को उभार कर प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व के प्रसार के लिये अवसर प्रदान करते हैं। नई समाज रचना के यह प्रारम्भिक कदम हैं

और बातें यह भी... (पेज दो का शेष)

दिया। मशीनें निकाले जाने के खिलाफ हम ने अदालत में दस्तक दी तो वहाँ कम्पनी ने हमें वेतन देना जारी रखने का वचन दिया। इस वर्ष 3 मार्च को फैक्ट्री से बची-खुची मशीनें भी निकाल ली गई पर हम तीन अब भी ड्युटी पर हैं।"

लोहामण्डी वरकर : "आजकल मन्दी है। काम कम है। काम जब बहुत था तब तनखा के अलावा ऊपरी दो पैसे भी बन जाते थे और समय का पता ही नहीं लगता था कि कब उड़ गया। आजकल खाली-से हैं। ऊपर वाले दो पैसे बन्द हो गये हैं, तनखा से पूरा पड़ता नहीं और समय काटना भारी समस्या बन गया है। मन में इधर-उधर की कई बातें आती हैं, कई किस्म के फितूर उठते हैं। नौकरी छूट जाने का डर हो गया है।"

अनुभव-सबक

जी के एन ड्राइवशाफ्ट मजदूर : "हड़ताल का नेतृत्व करने वाला एक बड़ा नेता तो वी आर एस लेने वाले 45 वरकरों में आगे रहा और दूसरा बड़ा नेता कम्पनी में ठेकेदारी करने लगा है। समझ कर और आपस में तालमेल रख कर ही हम वरकर अपने हितों की देखभाल कर सकेंगे। यह तो जाहिर ही है कि कम्पनी कम वरकरों से ज्यादा काम लेने की कोशिशें करेगी ही।"

कटलर हैमर वरकर : "अब किसी भी कम्पनी में बाहर की हड़ताल करना मूर्खता ही है क्योंकि समय बदल गया है। बाहर की हड़ताल अब कामयाब नहीं हो सकती। जितने भी नेता हुये हैं, एक से बढ कर एक निकम्मे साबित हुये हैं। इस बार हम सब यह मान रहे थे कि यह नेता हमारी पकड़ में रहेगा, अच्छा काम भी करेगा। हम सब बड़ी कोशिश से नेता के पीछे चले पर हमें डुबो दिया। अब तो हमें फैक्ट्री के अन्दर ही निपटना होगा।"

ईस्ट इण्डिया कॉटन मिल मजदूर : "हम फालतू में डी सी- डी एल सी- अदालत के चक्कर काटते रहे हैं जबकि कम्पनी का मामला बी.आई.एफ.आर. में है। इस बार डी.सी. आफिस में बहुत बातें होने के बाद यह बात सामने आई कि ईस्ट इण्डिया को बीमार कम्पनी घोषित किया जा चुका है इसलिये जो कुछ होगा वह बी.आई.एफ.आर. में ही होगा। बीमार कम्पनी को स्वस्थ करने के नाम पर बी.आई.एफ.आर. में हुई कसरतों ने झालानी टूल्स मजदूरों की जो दुर्गत की है वह हमारे सामने है। हम अपनी ऐसी दुर्गत नहीं होने देना चाहते। हमारा तो यही कहना है कि कम्पनी को स्वस्थ- ववस्थ करने की नौटंकी बन्द की जाये और कम्पनी की सम्पत्ति को नीलाम कर शीघ्र हमारा हिसाब दिया जाये। एक तो वैसे ही नेताओं का पता नहीं रहता और इधर कम्पनी फिर नये नेता पैदा करने में लग गई है। डर है कि कहीं झालानी टूल्स के लीडरों की तरह हमारे लीडर भी कम्पनी चलाने का कोई उल्टा- पुल्टा समझौता कर हमारी अधिक दुर्गत न कर दें।"

टालब्रोस इंजिनियरिंग वरकर : "लीडरों ने हमें मरवाया तो है ही, बुरी तरह से मरवाया है। बहुत साल हो गये इस कम्पनी में काम करते पर इतनी दुर्गत कभी नहीं हुई। बहुत बुरा हो रहा है: एक मिनट के लिये मशीन से मत हटो, उत्पादन बढ़ा कर दो, आपस में बात मत करो, टट्टी- पेशाब तक में टाँग अड़ाना, ऑपरेटरों को हैल्परों के काम में लगाना, ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की सँख्या बढाना...... इन हालात में कई नौजवान मजदूर, खासकरके प्लॉट 75 में, नौकरी छोड़ रहे हैं लेकिन यह तो कोई समाधान नहीं। विजेता के रूप में दनदना रही मैनेजमेन्ट के लगाम लगानी जरूरी है और लगाम हम ही लगायेंगे। समय लगेगा पर हम अब किसी नेता के फेर में नहीं पड़ेंगे।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पहुँचाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

एनरॉन के बहाने

कम्पनियाँ किसी की नहीं होती। कम्पनियों का कोई मालिक नहीं होता। ऐसे में कम्पनियों का सुचारू संचालन कैसे सुनिश्चित किया जाये? विद्वानों ने नुस्खा दिया : चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर, चीफ एग्जेक्युटिव अफसर आदि बड़े अधिकारियों को वेतन के एक हिस्से के रूप में कम्पनी के शेयर दिये जायें ताकि कम्पनी को मुनाफे में रखना और मुनाफे को बढाना साहबों के निजी स्वार्थ में हो। विश्व की बड़ी- बड़ी कम्पनियाँ विद्वानों के नुस्खे पर अमल कर रही हैं और इसका चलन छोटी कम्पनियों में भी तेजी से बढ रहा है।

स्वार्थ की कुँजी कमाल कर रही है। अधिकतर कम्पनियाँ अपने बही- खातों में हेरा- फेरी कर रही हैं। हिसाब- किताब में नटबाजी कर मनमाफिक मुनाफे दिखाये जाते हैं। और, महीने के लाखों लेते साहब लोग शेयरों की सट्टेबाजी में करोड़ों जेब में डालते हैं।

इधर बिजली क्षेत्र की विश्व की एक महारथी, एनरॉन कम्पनी द्वारा स्वयं को दिवालिया घोषित कर देने ने पर्दों की कुछ परतें उठाई हैं।

अमरीका के राष्ट्रपति, इंग्लैण्ड के युवराज को चन्दे देती एनरॉन कम्पनी द्वारा यहाँ नेताओं- अफसरों को पुचकार कर पर्यावरण का कबाड़ा करती डाभोल बिजली परियोजना और उसकी बिजली के ऊँचे रेट लेना अखबारों की खबरों में रहे हैं। एनरॉन के बही- खातों की जाँच की जिम्मेदार ऑडिट क्षेत्र की मशहूर एन्डरसन कम्पनी रही है। लगातार ऊँचे मुनाफे दिखाती एनरॉन के दिवालियेपन ने "घोटाला" के शोर- शराबे के बीच एनरॉन व एन्डरसन कम्पनियों की जाँच के लिये कई संसदीय समितियाँ बना दी गई हैं। और जिक्र कर दें, अमरीकी संसदों के 248 सदस्य जाँच समितियों में हैं — दूध का दूध और पानी का पानी करने वाले इन 248 संसद सदस्यों में से 212 ने तो एनरॉन अथवा एन्डरसन कम्पनी से चन्दे लिये हैं!

खैर। मण्डी का भँवर महारथियों को नहीं पहचानता और एनरॉन को घाटे पर घाटा होने लगा। मुर्गी ने अण्डे देना बन्द कर दिया तो साहब लोगों ने मुर्गी को काट खाने का निर्णय लिया। एनरॉन और एन्डरसन के अधिकारियों ने बही- खातों की खिचड़ी में भारी मुनाफे दिखा कर एनरॉन शेयरों के सट्टा बाजार में भाव प्रति शेयर 4 हजार रुपये तक पहुँचा दिये। एनरॉन के 29 बड़े साहबों ने अपने शेयर बेच कर तब 5500 करोड़ रुपये अपनी जेबों में डाले। एनरॉन की एक शाखा के अध्यक्ष ने 1750 करोड़ रुपये और एनरॉन के चीफ एग्जेक्युटिव अफसर ने 500 करोड़ रुपये इस प्रकार प्राप्त किये। बुलबुला फूटने पर एनरॉन के शेयरों का भाव 4 हजार रुपये प्रति शेयर से लुढक कर दस- बारह रुपये प्रति शेयर पर आ गया।

कम्पनी के दिवालिया होने में भी साहबों ने चाँदी कूटी पर एनरॉन के हजारों कर्मचारियों की पेन्शनें भी डूब गई, नौकरियाँ तो गई ही।

चन्द अन्य उदाहरण: कॉर्निंग कारपोरेशन के अध्यक्ष ने कम्पनी के अपने शेयर बेच कर 70 करोड़ रुपये जेब में डाले जिसके बाद शेयरों के भाव 85 प्रतिशत गिर गये; जे डी एस यूनिफेज के सह- अध्यक्ष द्वारा शेयर बेच कर 115 करोड़ रुपये जेब में डालने के बाद कम्पनी के शेयरों के भाव 90 प्रतिशत गिर गये; प्रोविडेन्शियल फाइनैन्स के उपाध्यक्ष ने अपने शेयर बेच कर 70 करोड़ रुपये जेब में डालने के बाद बताया कि बही- खाते ठीक से हिसाब नहीं दिखाते और इस पर 3 हजार रुपये प्रति शेयर का भाव गिर कर 200 रुपये प्रति शेयर हो गया;....

किनारों वाली गुमनाम- सी कम्पनियों के साहब इस प्रकार से अधिकतम रकमें लेने वालों में हैं।

और, फ्रान्स में तो कम्पनियों के चेयरमैनों, मैनेजिंग डायरेक्टरों की भयंकर वित्तीय अपराधों में गिरफ्तारियाँ लगभग रुटीन, सामान्य बात बन गई हैं।

मालिक का स्थान लेते चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर-चीफ एग्जेक्युटिव अफसर ने मजदूरों के वर्तमान तथा भविष्य को और अधिक असुरक्षित कर दिया है। एस्कोर्ट्स, बाटा, गुडईयर, व्हर्लपूल, ए बी बी आदि की नाम के फेर वाली पट्टियाँ उतारने के लिये एनरॉन और एन्डरसन के उदाहरण पर्याप्त होने चाहियें। झालानी टूल्स कोई अजूबा नहीं है।

वर्तमान समाज व्यवस्था के उन्मूलन और नई समाज रचना के लिये विचार- विमर्श प्रत्येक मजदूर- कर्मचारी की प्राथमिकताओं में शीर्ष स्थान पर होना बनता है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।